दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांकः 01.09.2025

प्रकाशनार्थ

दिनांक 01.09.2025 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर में युगपुरूष ब्रह्मलीन मंहत दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत "अखण्ड भारत की अवधारणा" विषय पर व्याख्यान का आयोजन समाजशास्त्र विभाग, मनोविज्ञान एवं शारीरिक शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो0 अरविन्द कुमार सिंह, प्राचार्य, शिवपति पी.जी. कालेज शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर ने कहा कि राष्ट्र एक भाव–भावना से जुड़ा शब्द है। 15 अगस्त, 1947 की रात में हमने भारत विभाजन की सीमा को स्वीकार किया, यह अखण्ड भारत की खण्डित रेखा कृत्रिम है। कोई भी राष्ट्र एक जीवित शरीर की तरह ही होता है और इसे राष्ट्र बनाने वाले यहॉ के लोग होते है। यह पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र है। पूरी दुनिया के अन्दर भारतीय संस्कृति के अवशेष किसी न किसी रूप में विद्यमान है। भारतवर्ष की अखण्डता धार्मिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक रूप से दिखाई देती है। वास्तव में कैलाश से कन्याकुमारी तक पूरा भारत एक है और आने वाले समय में भारत माता अपने परम वैभव को प्राप्त करेंगी।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री राजेन्द्र भारती, सदस्य महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, ने कहा कि आज राजनीति में सबसे बड़ा खतरा जातीय राजनीति है। हमें सम्पूर्ण भारतवर्ष को एक अखण्ड राजनीतिक इकाई के रूप में देखना चाहिए। हमारी पहचान ही धर्म था, हम अपनी संस्कृति व सभ्यता से पूरे विश्व को आप्लाविद् कर विश्वगुरू के रूप में स्थापित होगें। देश का धर्म के आधार पर जो बंटवारा किया गया, यह बहुत बड़ी विडम्बना थी। हमें जाति–पांति की भावना से बाहर निकलना होगा और अपने हिन्दू होने पर गर्व का अनुभव करना होगा। हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोकर ही सास्कृतिक दृष्टि से अखण्ड भारत की स्थापना कर सकते है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि भारत का भौगोलिक विस्तार सांस्कृतिक रूपों में बड़ी व्यापक रही है। आज भारतवंशियों का वर्चस्व दुनिया के कई सारे देशों में बना हुआ है। यदि विभाजन के बीज पहले से मौजूद नहीं रहेंगे तो हमें कोई भी तोड़ नहीं सकता। जिन्ना की जिद और नेहरू की उम्मीद के बीच इस देश का बंटवारा किया गया। दुनियॉं में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहॉ जनसंख्या को एक समस्या माना जाता है, क्योंकि हमारे यहॉं क्रियाशील जनसंख्या का अभाव है। आज अर्थव्यवस्था में हम दुनियॉं में चौथे स्थान पर है और आने वाले समय में 2037 तक दूसरे स्थान पर होंगे। किसी भी राष्ट्र के समुचित विकास में शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य, समृद्धि व शांति पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा।

उक्त कार्यक्रम में प्रस्ताविकी प्रो0 अर्चना सिंह प्रभारी समाजशास्त्र विभाग, अतिथि परिचय डॉ. विवेक शाही संयोजक व्याख्यानमाला, धन्यवाद ज्ञापन अवधेश शुक्ला, प्रभारी शारीरिक शिक्षा विभाग व संचालन डॉ. समृद्धि सिंह ने किया। उक्त अवसर पर डॉ. निधि राय, डॉ. पीयूष सिंह, डॉ. त्रिभुवन मिश्रा, डॉ. सुनील सिंह, डॉ. दीपक सिंह, विवेकानन्द शुक्ल, डॉ. सरिता सिंह, आशुतोष दूबे सहित महाविद्यालय के समस्त शिक्षक, कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

उक्त कार्यक्रम की जानकारी मीडिया सह प्रभारी डॉ. सुनील कुमार सिंह ने दी।

डॉ.(सुनील कुमार सिंह)
सह– प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क